आज की मुरली का सहज सार और पुरुषार्थ ---------- Date: 24-07-14

हमें दुखधाम से निकाल कर सुखधाम में ले जाने वाले बाबा ने कहा, मीठे बच्चे - माया रावण के संग में आकर तुम भटक गये, पवित्र पौधे अपवित्र बन गये, अब पवित्र बनाने वाले बाप को याद कर फिर से पवित्र बनो.

हम बच्चे बाबा के बेहद के यज्ञ की सेवा करते, जब कभी सेवा में असफलता मिलती है या हमारी अपेक्षा के अनुसार सफलता नहीं मिलती है तो बहुत व्यर्थ संकल्पों में चले जाते है. आज बाबा ने पुरी मुरली में इस बेहद के सृष्टि चक्र के ड्रामा में हम आत्माओं को स्वदर्शन कराते बार-बार यही याद दिलाया की, कैसे हम आत्माओं का, बाबा की याद से, अभी संगम पर उत्थान होता है और फिर द्वापर से माया का राज्य आने से धीरे-धीरे पतन होता है. इस तरह से बाबा हम बच्चों को व्यर्थ से मुक्त होने की युक्ति बताते हैं.

बाबा ने आज मुरली में जितनी बार हम आत्माओं को स्वदर्शन कराया उसको ही फिरसे रिपिट करेंगे तो हमारे व्यर्थ भी समाप्त हो जायेंगे.

- यह ड्रामा कितना वन्डरफूल है. हम क्या थे, किसके बच्चे थे और बरोबर बाप से वर्सा मिला था, फिर कैसे हम भूल गये!

- हम सतोप्रधान दुनिया में सारे विश्व के मालिक थे, बहुत सुखी थे. फिर हम सीढ़ी उतरे. रावण आया गोया इतनी फागी आ गई जो रचता और रचना को हम भूल गये.

- आज से 5 हजार वर्ष पहले बाबा हमें राज्य-भाग्य देकर गये, बडे आनन्द मौज में थे, यह भूमि फिर क्या हो गई! कैसे रावण राज्य में आ गये!

- हम भक्तिमार्ग में कितना भटके हैं! आधाकल्य भक्ति की है, किसलिए? भगवान से मिलने के लिए. भक्ति के बाद ही भगवान् फल देते है. क्या फल देते हैं?

- हम क्या थे फिर कैसे राज्य-भाग्य करते थे फिर कैसे सीढ़ी नीचे उतरते-उतरते रावण की जंजीरों में बंधते गये.

- अपने राज्य में कितना सुख था फिर पराये राज्य में कितना दुख उठाया.

- पहले-पहले हम अपरमअपार सुख में थे, फिर अपरमअपार दुख में आये.

- हम किसके बच्चे थे? बाप ने हमको सारे विश्व का राज्य दिया फिर कैसे हम रावण राज्य में जकड़ गये. कितने दुख देखे, कितने गन्दे कर्म किये.

- हम कितने पवित्र पौधे थे, जिसको बाबा ने राज्य-भाग्य दिया, वह फिर राज्य-भाग्य देने वाले बाप को ही हम भूल गये! माया के संग में हम इतना गिर पडे जो जिसने हमको आसमान में चढ़ाया उनको ठिक्कर-भितर में ले गये.

- हमको बाबा ने राज्य-भाग्य दिया, फिर हम देवतायें हेविन में थे फिर हम रावण राज्य में कैसे आये, यह भी ड्रामा में पार्ट है.

- हम शिवालय में तो बहुत सुखी थे. अब हम पराये रावण राज्य में आकर पड़े हैं, तो कितने दुखी हुए हैं.

- हम तो विश्व के मालिक थे. फिर कहॉ आ गये? अब फिरसे अपना राज्य-भाग्य ले रहे हैं.

- पहले हम कितने सुखी थे पूज्य थे, अब हम पुजारी बन पड़े तो कितना दुखी हुए. हमको क्या हो गया.

- बाबा ने हमको सतोप्रधान बनाकर, हमारा इस भवसागर से बेड़ा पार किया था फिर हमको तमोप्रधान किसने बनाया? रावण ने.

इस तरह से बार-बार, हम आत्माये इस बेहद के सृष्टि चक्र में अपनी जरनी को याद करने से हमारे व्यर्थ संकल्प जो सेवा में विघ्न रुप बनते है उसे समाप्त कर सकेंगे.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email:
a.brahmin.soul@gmail.com .